RNI Reg. No. : HARHIN/2017/72144

नवंबर - 2022 से जनवरी -2023
मूल्य : 60 रुपये, अंक : 8

यात्रा आमन्त्रण

भारत की एक मात्र हिंदी पर्यटन पत्रिका

धार्मिक यात्रा बनी अंतिम यात्रा

पिछले सौ सालो से उत्सव आयोजन के दौरान होने वाले मौतों पर विशेषांक

स्वच्छ भारत अभियान के तहत ब्रश से सफाई पर जागरूकता कार्यक्रम

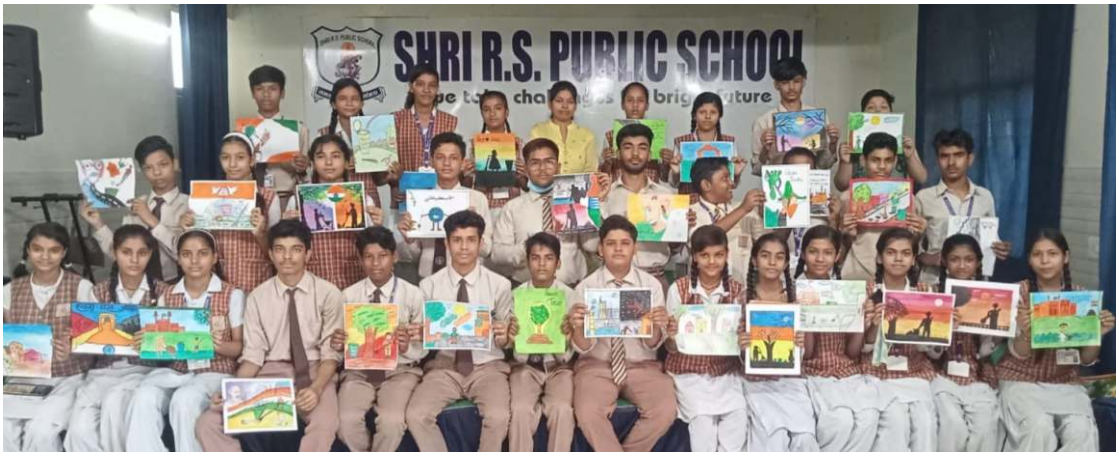

आज ब्रश से सफाई की क्या , इस विषय पर आगरा शहर में विल इंडिया चेंज फाउंडेशन द्वारा और बोर्घी इंडिया के सहयोग से चित्र कला और निबंध प्रतियोगिता आयोजित किया गया । 14 जुलाई से 20 जुलाई के मध्य स्वछता पर आधारित इस कार्यक्रम में 60 से अधिक विद्यालय और 12 हज़ार विद्यार्थीओ ने भाग लिया। पुरस्कार वितरण समारोह सैंट एण्ड्रूस हाई स्कूल के सभागार में रखा गया था। डॉ देवाशीष भट्टाचार्य , डॉ रूपाली खन्ना और डॉ साधना सिंह निर्णायक के भूमिका में रहे।बता दे , यह संस्था हमारी पत्रिका की ही एक और इकाई है जिसमे सामाजिक कार्यो पर कार्यक्रम किये जाते है। यह सीजन तीसरा था , इस से पहले राजकोट और मीरा भायंदर में इस कार्यक्रम को सफलता पूर्वक संस्था द्वारा आयोजित किया जा चूका है।

जोश और हर्षोउल्लास के साथ सम्पन हुआ इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड का सालाना कार्यक्रम

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड के सौजन्य से आयोजित किया गया चौथा विश्व रिकॉर्ड धारकों की बैठक इस बार का शीर्षक था वन ब्लड वन वर्ल्ड श्री फोर्ट सभागृह के प्रांगण में दिनाक 11 सितम्बर को यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड के प्रधान संपादक श्री बिस्वरूप रॉय चौधुरी के उपस्थिति में अलग अलग प्रतिभाओ को सम्मानित किया गया। इस मौके पर आठ से दस देशो के रिकॉर्ड एजेंसी के प्रधान सम्पादको ने शिरकत की।

यात्रा आमंत्रण

Tour and Travel

Mumbai AJANTA & ELLORA Alibaug Tour

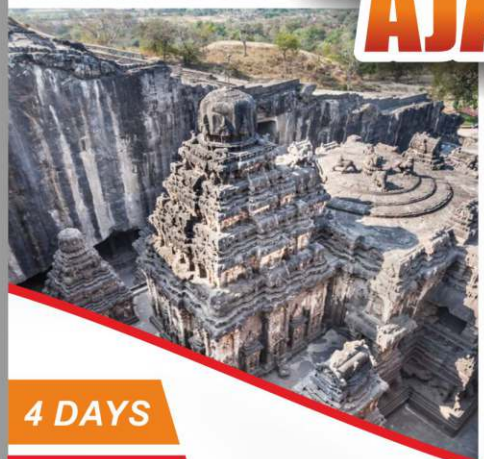

4 DAYS

3 NIGHT

PACKAGE INCLUDED

TRANSPORT | HOTEL | 3 TIME MEAL | TOUR MANAGER | GUIDED TOURS | SIGHTSEEING | ENTRY TICKETS TO MAJOR ATTRACTIONS

EXCLUDING TRAIN/ AIR FARE

EXPERIENCE RICH HISTORY OF MAHARASHTRA WITH TRAVEL JOURNALISTS

ALL COST PER PERSON

₹14,400*

Minimum tour group 5 person

Customize Maharashtra trip for family & couples available

*condition apply

7758968909
8669900014
9971229644

www.yatramantran.com

Address: B 121, 2nd floor, Green Field Colony
Faridabad, Haryana

THIS TRIP INCLUDED SPIRITUAL TOURISM / BEACH TOURISM / HISTORICAL TOURISM

संपादक की कलम से

मैं यात्रा और पर्यटन में पत्रिका प्रकाशित करता हु। आप यात्रा करे इसके लिए मैं जानकारी रिपोर्ट करता हु। पर मेरे पत्रिका के कवर पर मौत वाकई मुझे पसंद नहीं। पर जिस देश ने कोरोना के नाम पर दो साल तक नागरिक को गुलाम की तरह रखा और कारण गिनवाए , की हम जान बचा रहे है। उसी देश में हज़ारो लोग तीर्थ यात्रा में मारे जा रहे है , तब कोई जान बचाने क्यों नहीं आ रहा है। क्रूर मौत और वीभत्स्य अकाल मृत्य , जब आप रौदे जाये , कुचले जाये , एक एक सास के लिए तरसे। यह नरक की मौत है। मानव जीवन इतना सस्ता कैसे हो गया। हमने पूछना बंद कर दिया। यात्रा के नाम पर मौत हर कदम लिखी जा चुकी है। अभी पता चला है की सड़क दुर्घटना से हर घंटे 18 लोगो की मौत हो जाती है । आपके धार्मिक स्थल या वहा तक की यात्रा , सब मौत की वजह बन जाये , ऐसी नौबत आने क्यों दी जा रही है। धर्म के नाम पर राजनैतिक रोटियां सेकने वाले हमारे नेता , इस मौत पर क्यों बात नहीं करते है। हज़ारो करोड़ के चंदा पर बैठे मंदिरो की घण्टीओ से यह चीख पुकार की आवाज़े क्यों सुनाई पड़ने लगी है। हम इतने असवेदन शील हो गए की एक लाश सामने से गुजर जाये और हमे सब सामान्य लगता है। धार्मिक पर्यटन के नाम पर योज़ना बना देने से मसला नहीं सुलझने वाला है। मैं ज्यादा नहीं लिखना चाहता हु पर कुछ आंकड़े ज़रूर आपको विचलित कर सकता है। बाकि आज़ादी का अमृत महोत्सव के क्या मायने , यह आप विचार करे।

विश्वदीप रॉय चौधुरी
प्रधान संपादक

संपादकीय टीम

› मुख्य संपादक
- बिस्वदीप रॉयचौधरी

› महाराष्ट्र ब्यूरो प्रमुख
- नितिन कलजे

› माननीय सलाहकार
- गौर कांजीलाल

› कानूनी सलाह और
उत्तर प्रदेश प्रमुख - प्रताप सिंह

› संवाददाता - सुहासिनी साकिर

› जनसंपर्क अधिकारी - मोहन जोशी

› कॉपी संपादन - यज्ञ भारद्वाज

› ग्राफिक डिजाइनर - शिव पांडेय

› प्रकाशन सलाहकार - शंकर कोरेंगा

› विडियो संपादक - कपिल अग्री

› परामर्श संपादक - मोहम्मद इस्माइल

› मुंबई प्रमुख - नरेंद्र पाटिल

विज्ञापन के लिए

Whats app करें 9971229644
Youlube/Asatya Bharat
www.yatramantran.com

Follow us
@ yatramantran/
twitter/
Facebook /
Instagram

हमें मेल करें या अपना नाम हमारी
फ्री सर्कलेशन सूची में शामिल करें /
प्रेस विज्ञप्ति यहां भेजें
yatraamantran@gmail.com

प्रकाशक का पता;
B 121, 2nd floor, Green Field ,
Faridabad, Hariyana 121001

धार्मिक यात्रा बनी अंतिम यात्रा

हमारी दादी कहती थी की पहले जब कोई धार्मिक यात्रा के लिए प्रस्थान करता था , तो उसके परिवार और सगे सम्बन्धी विलाप करते थे। ऐसी क्या वजह थी की किसी के तीर्थ यात्रा पर परिवार में शौक का माहोल व्याप्त हो जाती थी। वजह एक ही थी। जो व्यक्ति तीर्थ यात्रा के लिए कूच कर रहा है वह वापस जिन्दा लौटेगा या नहीं , कहा नहीं जा सकता है। कहते थे उन दिनों भगवान् के दर्शन करने जो निकला वह भगवान् को ही प्यारा हो जाता था। आज से सौ साल पहले , न हवाई जहाज़ थे , न रेल गाड़ी , न बस , न वातनाकुलित कार , न हाईवे , न होटल। तीर्थ यात्री जंगलो से , सुनसान इलाको से , अनजान रास्तो से गुजरते थे और यहाँ से गुजरने के दौरान कई बार डैकैट और जंगली जानवर से आमना सामना हो जाया करता था। कई बार भोजन ख़तम और भुखमरी से मौत। ऐसी तीर्थ यात्रा सालो लम्बी चलती थी। कई बार अकेले , कई बार कुछ लोग साथ हो लेते थे।

पर दशको बाद अब जब यातायात के साधन विकसित हुआ तो लगा चलो अब धार्मिक यात्रा में भगवान् जी के दर्शन करेंगे , आशीर्वाद लेंगे और मन्नत मांग के घर वापस आ जायेंगे। पर मौत ने लगता है अब भी पीछा नहीं छोड़ा है। अब भी मरने की पूरी संभावना है और जिन्दा घर लौटेंगे ऐसा सोच रहे है तो भूल जाइये। चलिए पहले आकड़ो पर एक नज़र घुमा लेते है।

महाराष्ट्र में गणपति विसर्जन में इस साल २० लोगो ने प्राण गवा दिए वही हरियाणा के सोनीपत में सात लोग मूर्ति विसर्जन के दौरान डूब गए। 2019 में 17 लोग महाराष्ट्र से

> **जो तीन सबसे जानलेवा घटना सामने आई उसमे पहले नंबर पर था सन 2005 की बगदाद की घटना, जिसमे धार्मिक जलूस के दौरान 965 जाने गई। दूसरी घटना मीणा वैली की थी जिसमे हज के दौरान वर्ष 2006 में 380 लोग मारे गए और तीसरे नंबर पर है कंबोडिया की राज्यधानी फेयॉन फेथ ,जिसमे वर्ष 2007 में 347 लोगो ने अपनी जान गवाई।**

और भोपाल के खेतलपुर घाट में गणेश विसर्जन के दौरान नाव पलटने से 18 लोगो की मौत हो गयी। बिहार में साल 2021 में छठ पूजा के दौरान 33 नागरिक की मौत डूबने से हुई। समस्तीपुर , गया , सरन जैसे इलाको से इन मौतों की खबर आई। वर्ष 2013 में होली महोत्सव के दौरान डूबने से तक़रीबन देश के अलग अलग इलाको से 17 मौतों की खबर आई। झारखण्ड के लातेहार जिले में सात लोगो की मौत तालाब में डूबने से हो गयी। यह घटना साल 2021 की है।

वर्ष 1980 से 2007 के बीच पूरी दुनिया में धार्मिक स्थलों में भगदड़ की तक़रीबन 215 घटनाये सामने आई जिसमे 7069 मौते हुई और 14 हज़ार श्रद्धालु गंभीर रूप से घायल हुए। हमारे अपने देश में धार्मिक मेले में लाखो लोग आते है और अपने श्रद्धा भाव से गंगा मैया के दर्शन करते है। प्रयागराज का कुंभ मेला पूरी दुनिया का सबसे विशाल धार्मिक मेला माना जाता है जहा करोडो तीर्थ यात्री शामिल होते है। प्रयागराज जो पहले इलहाबाद के नाम से जाना जाता था , उसके इतिहास में जाये तो पाएंगे सन 1840 , 1906 , 1954 और 1986 में , भगदड़ की घटना हुई जिसमे बड़ी संख्या में जाने गयी। वर्ष 1954 में फ़रवरी के तीसरी तारीख को 800 लोग , मौत के आगोश में सो गए और 2000 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। यह मौनी अमावस्या का दिन था।

जोधपुर की घटना में बम की झूठी खबर से भगदड़ मची और 226 श्रद्धालु मौत के मुँह में समां गए। यह घटना 2008 की

है जब 12 हज़ार लोग पहाड़ी पर बने एक मंदिर में दर्शन के लिए जमा हुए थे।

वर्ष 2008 में नैना देवी की घटना बेहद दुखद थी, जब तेज बारिश के बाद भी तक़रीबन 25 हज़ार दर्शनार्थी माता के दरबार में जमा हुए और वही धक्का मुक्की का ऐसा मंजर चला की 145 नागरिक अपने प्राण गवा बैठे।

पर यह हमारा देश है , एक तरफ जहा हम दुनिया के तीसरे नंबर के आमिर व्यक्ति को देख रहे है वही कपड़े और खाने की मारा मारी में लोग अपने प्राणो की आहुति दे रहे है। बिहार यु भी गरीब राज्य माना जाता है। वर्ष 2010 में , कुंडा गांव के एक मंदिर में गरीबो को मुफ्त में कपड़ा और भोजन देने की व्यवस्था की गयी थी। उसे पाने की ऐसी होड़ मची की अफरा तफरी में 63 लोगो की लाशे बिछ गयी।

महाराष्ट्र के वाई में माता कालू देवी की बड़ी मान्यता है और साल में एक बार धार्मिक आयोजन होता है जिसमे 4 लाख से जयादा की भीड़ जुटती है। मंदिर में प्रवेश को लेकर अफरा तफरी का माहौल बन गया और वही दूसरी तरफ सिलिंडर विस्फोट से कुछ दुकानों में आग लग गयी। इन दोनों बातो ने स्थिति को अनियंत्रित कर दिया और सब अपनी जान बचाने के चक्कर में लग गए । फिर क्या , इस हादसे में 258 तीर्थ यात्री कुचल के मर गए।

घरेलू पर्यटन में 60 प्रतिशत यात्री की पहली पसंद धार्मिक यात्रा होती है। हम सब कही न कही अपने संस्कारो से जुड़े होते है। 2019 में एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमे कहा गया की हमारे देश में 100 करोड़ लोग अपने धार्मिक स्थलों की यात्रा में रहे। CAGR की रिपोर्ट प्रकाशित हुई और उसमे कहा गया की एशिया पैसिफिक का धार्मिक पर्यटन वर्ष 2022 तक 5.3 बिलियन डॉलर का रहा , जो वर्षा 2032 तक बढ़ के 14.4 बिलियन डॉलर होने की सम्भावना है।

जब आप मंदिर जाते है तो प्रसाद मिलता है तो सरकार ने भी एक योज़ना लेकर आई , प्रसाद। स्वदेश दर्शन एंड दी पिल्ग्रिमेज रेजुवेनशन एंड स्पिरिचुअल ऑग्मेंटेशन ड्राइव। नाम जितना भरी भरकम था उतनी ही बजट भी , तक़रीबन 185 मिलियन डॉलर। 2020 में उत्तर प्रदेश सरकार ने ब्रज तीर्थ विकास परिषद् की स्थापना की। इसमें कई सर्किट की रूप रेखा तैयार की गयी जैसे रामायण सर्किट , महाभारत सर्किट , शक्तिपीठ सर्किट , जैन और बुध्दिस्ट सर्किट।

पर योज़ना को एक तरफ रख के देखे तो भीड़ के नियंत्रण और उसके प्रबंधन पर प्रशासन बहुत सुस्त दीखता है।

केरल के सबरीमाला में 40 दिन में तीन करोड़ लोग दर्शन के लिए आते है। सबरीमाला मंदिर को चंदे से 250 करोड़ की कमाई होती है और दुनिये के नौ सबसे जयादा भीड़ के मामले

में इस मंदिर का नाम भी आता है। वर्ष 2018 में भीड़ के चलते 40 भक्त बुरी तरह घायल हो गए वही इसी मंदिर के सामने वर्ष 2011 में 110 लोग भगदड़ में मारे गए।

अप्रैल 2000 में बिहार के दौलतांगंज में झुलसने से 28 की मौत हो गयी। रथ रूपी जिस पालकी के साथ यह यात्रा चल रही थी उस पालकी का एक हिस्सा बिजली के तार से टकरा गया और इस रथ के संपर्क में जो थे , उनकी मौत बिज़ले के झटके से हो गयी।

केरल में भी ऐसी घटना हाल फिलहाल में घटी। कोलम जिले के पुत्तिंगल देवी मंदिर में लोग आतिशबाज़ी देखने जमा हुए थे। अक्टूबर 2013 की इस घटना में एक रॉकेट उड़ते हुए उस जगह पर गिरी जहा पर बाकि सभी पटाखे रखे हुए थे। यह सब हिन्दू नव वर्ष मनाने इकठा हुए थे। इस आगज़नी में 100 लोगो ने अपने प्राण खोये और 200 घायल हुए।

हम सोचते है की हमारे पास आध्यात्मिक इतिहास की धरोहर है। unesco ने हाल ही में पश्चिम बंगाल के दुर्गा पूजा को शामिल किया है। इसके आलावा छह मंदिर भी इस सूचि में शामिल है । हमे गर्व है इस बात पर। पर सिर्फ गर्व करने से काम नहीं चलेगा। देखना होगा की किसी की मौत बेअदबी से न हो। कोई घर से मंदिर इसलिए नहीं गया की उसकी अर्थी वापस आये। उसकी मौत कुचल के हो। उसके अपने लोग उसको मरते हुए देखे। तीर्थ के नाम पर लीपा पोती का यह पैटर्न अब बदलना चाहिए।

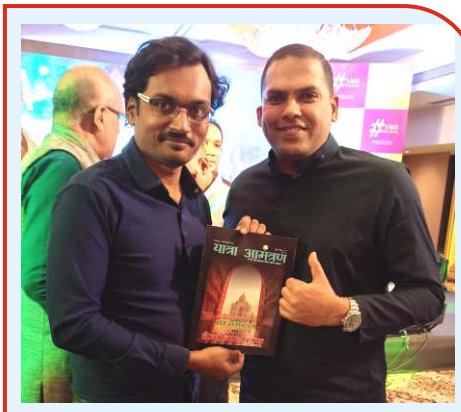

यात्रा आमंत्रण ने अपने पिछले अंक में श्री लंका में पर्यटन के आर्थिक गिरावट पर लेख प्रकाशित किया था, सितम्बर 29 को श्री लंका पर्यटन ने मुंबई में रोडशो किया और आहवान किया की श्री लंका पर्यटक के आगमन और स्वागत के लिए तयार है, इस मौके पर श्री लंका के पर्यटन मंत्री श्री हारून फर्नांडो से मुलाकात का अवसर प्राप्त हुआ, श्री लंका के लिए चुनौती बड़ी है पर भारत के ट्रैवल ऑपरेटर के संग मुलाकात से निसंदेह सफलता प्राप्त होगी,

आउटबोंड ट्रेवल मार्ट (ओटीएम) द्वारा आयोजित पर्यटन मेले में गोवा स्टाल में श्री धीरज आर वागले , उप निदेशक , गोवा पर्यटन विभाग के संग यात्रा आमंत्रण की प्रति साझा करते हुए संपादक विश्वदीप रॉय चौधुरी।

वाइल्डलाइफ एसओएस की पहल

आगरा में है भालुओ के संरक्षण पर सबसे बड़ा केंद्र

आगरा भालू संरक्षण केंद्र दुनिया का सबसे बड़ा स्लॉथ भालू के लिए रेस्क्यू और पुनर्वासन केंद्र है। उत्तर प्रदेश वन विभाग के सहयोग से वाइल्डलाइफ एसओएस द्वारा 2002 में स्थापित, यहाँ वर्तमान में तालाब और छायादार पेड़ों के साथ बड़े जंगल रुपी बाड़ों में लगभग 110 स्लॉथ भालू रहते हैं। कलंदरों द्वारा प्रताड़ित यह भालू पुनर्वासन से पहले "डांसिंग बेयर" यानी नाचने वाला भालू के रूप में सड़कों पर प्रदर्शनी के लिए इस्तमाल किये जाते थे। यह केंद्र उन्नत अनुसंधान, रोग प्रबंधन पर काम करता है और यहाँ पुनर्वासित स्लॉथ भालू के लिए विशेष पशु चिकित्सा सुविधाओं के साथ-साथ बूढ़े भालुओं को उचित देखभाल प्रदान की जाती है।

वाइल्डलाइफ एसओएस में वन्यजीव पशु चिकित्सक और भालुओं की देखभाल करने वाले उनके कीपर्स की एक समर्पित टीम है। भालुओं के लिए वाइल्डलाइफ अस्पताल में एक्स-रे और अल्ट्रासाउंड के लिए आवश्यक उपकरणों के अलावा डेंटल किट, एक ऑपरेशन थिएटर और किसी भी भालू की देखभाल की जरूरतों को पूरा करने के लिए आधुनिक ज़माने के आवश्यक अन्य उपकरणों के साथ ही साथ एक प्रयोगशाला भी है। केंद्र में एक विशेष कब वीनिंग क्षेत्र भी है जो शिकारियों और कलंदरों से बचाए गए भालू के बच्चों के लिए समर्पित है, क्योंकि इन बच्चों को शुरुआती महीनों के दौरान बहुत सावधानी और अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है।

वाइल्डलाइफ एसओएस ने देश भर में भालुओं पर हो रहे शोषण को सफलतापूर्वक समाप्त किया है और विभिन्न प्रदेशों के वन विभाग के साथ मिलकर पूरे भारत से 600 से अधिक स्लॉथ भालुओं को अवैध हिरासत से छुड़ा कर अपने अलग-अलग सेंटर्स में पुनः एक नया और बहतर जीवन जीने का अवसर प्रदान किया है। संस्था ने डांसिंग बेयर की प्रथा को जड़ से नष्ट करने के लिए इन भालुओं के साथ-साथ कलंदर समाज की भी आर्थिक रूप से मदद कर उन्हें भी पुनर्वासित किया है। वाइल्डलाइफ एसओएस ने 2009 में भारत में डांसिंग बेयर प्रथा को हल करने के लिए भारत सरकार के साथ भी काम किया है

मेघालय में उत्सव का मौसम - नवंबर और दिसंबर महीने में

इस बार क्यों न सैर पूर्वोत्तर भारत की जाये। वजह यात्रा आमंत्रण से समझिये क्युकी सर्दियों के आगमन के इन दो महीनो में बेहद शानदार उत्सव का आयोजन प्रति वर्ष किया जाता है। यह उत्सव मेघालय के परंपरा और वह के जीवन शैली का प्रतिक है। यह एक शानदार मौका होता है पर्यटकों के लिए जब वह मेघालय के दैनिक जीवन और लोक संस्कृति का परिचय कर सकते है।

मेघा संगीत उत्सव नवंबर 17 और 18

साहित्य उत्सव नवंबर 21 से २३ : यह उत्सव साहित्य के इर्द गिर्द होता है पर यह सम्पर्पित होता है चेरी ब्लॉसम फूल को क्युकी यह फूल इसी समय में खिलता है। कोविद से पहले इस आयोजन में 50 हज़ार से अधिक नागरिक और पर्यटकों ने भाग लिया था।

शिल्लोंग चेरी ब्लॉसम उत्सव नवंबर 17 से 26: मेघालय के कई शहर में एक साथ इस उत्सव को मनाया जाता है। मुख्यत यह प्रकृति को समर्पित उत्सव है।

नोंगक्रेम नृत्य महोत्सव : नवम्बर के दुसरे हफ्ते यह नृत्य महोत्सव होता है। पांच दिन चलने वाले इस उत्सव में देवी का ब्लेई सीनशर और दुसरे देवताओ को नृत्य के माध्यम से खुश किया जाता है ताकि भरपूर फसल की पैदावार हो।

वांगला महोत्सव (नवंबर 9 से 11) मेघालय का वांगला महोत्सव भारत के मेघालय के गारो में सबसे लोकप्रिय त्योहार है। वांगला महोत्सव उर्वरता के सूर्य-देवता सालजोंग के सम्मान में आयोजित एक फसल उत्सव है। यह सर्दियों की शुरुआत का भी प्रतीक है।

इस आलावा मि गोंग उत्सव भी होने वाला है जहा पर स्थानीय गोरोस के संस्कृति और लोक कला का परिचय दिया जाता है।

अंतराष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल दिसंबर 12 तो 16

विंटर टेल्स फेस्टिवल दिसंबर 12 से 14: डाकि क्राफ्ट द्वारा प्रायोजित इस उत्सव में पुरे मेघालय के कला , संगीत और पारम्परिक भोजन को लेकर प्रदर्शनी लगाई जाती है।

चीता का पर्दापण भारत में और सोशल मीडिया के किस्से

जिस नहीं भी मालूम उस तक भी खबर लग गयी की चीता ने देश में वापस दस्तक दे दी है। प्रधानमंत्री की रूचि जिस तरफ जाती है , गोदी मीडिया के लिए वह आर या पार का मसला हो जाता है। चीता नेशनल सेलिब्रिटी बन गया। ऐसा लगा की दूसरी दुनिया से कोई परग्रही आया है और जिसका आगमान असंभव सा था पर प्रधानमंत्री मोदी का ऐसा मायाजाल , की चीता को आना ही पड़ा। इतना शोर मचा चीता की सोशल मीडिया में भी कई किस्से चल पड़े। चलिए उन किस्सों की और चलते है।

किस्सा नंबर एक

मध्यप्रदेश के कूनो नेशनल पार्क में चीता के लिए आर्थिक खर्चा कितना रखा गया है। जो खबर आ रही है उसके मुताबिक प्रोजेक्ट चीता में सरकार का बजट 200 से 250 करोड़ का है। एक और रिपोर्ट के माने तो अगले पांच साल के लिए 95 करोड़ का बजट रखा गया है। खैर हम पता कर रहे है की आखिर कितना पैसा इन चीतों के लिए रखा गया है।

किस्सा नंबर दो

गोदी मीडिया यह नहीं बता रही है की मुख्यमंत्री रहने के दौरान मोदी ने दो चीता सिंगापुर से वर्ष २००९ में लाये थे। इन चीतों को सकार्बोग चिड़ियाघर में रखा गया था। पर प्रजनन की कोशिश में कामयाबी नहीं मिली और 12 साल की उम्र तक यह जीवित रहे। इसके बाद यह दोनों चीता प्राकृतिक मृत्यु को प्राप्त हुए। पर इस किस्से को न प्रधानमंत्री ने याद किया न उसकी चेहती गोदी मीडिया ने। गोदी मीडिया मीडिया का काम है की वह सिर्फ वह दिखाए जो आका को खुश करे पर यात्रा आमंत्रण की ऐसी कोई मज़बूरी नहीं है।

महाराजा माधवराव द्वितीय की यह तस्वीर भी चर्चा में है जिनके शासन काल में इन चीतों का शिकार किया गया और आज उन्ही की अगली पीढ़ी यानि ज्योतिरादित्य सिंधिया स्वयं इन चीतों के स्वागत के लिए ग्वालियर हवाई अड्डे में मौजूद थे।

किस्सा नंबर तीन

चीतों का राष्ट्रीय स्वागत के बाद राजकीय भोज का भी आयोजन किया गया है। ताजा खबर के मुताबिक 181 चीतल राजगढ़ से मंगवाए गए है और अभी 1500 चीतल और लाने की तैयारी चल रही है। जब तक यह पत्रिका आपके हाथ आएगी तब तक यह सब चीता के भोजन का हिस्सा बन चुके होंगे। बिष्णोई संघटन ने हिरण को लेकर अपना विरोध दर्ज़ कराया है।

किस्सा नंबर चार

अरब में चीता तो कोई बड़ी बात है ही नहीं। कुत्तो बिल्लियों जैसे पालतू जानवर की तरह इनके शयन कक्ष में देखे जा सकते है। यु तो अब जंगली जानवर के रखने पर पाबन्दी है पर खबरों के मुताबिक अब भी हज़ार से जयादा चीते लोगो के घरो में आराम फरमा रहे है। गैर क़ानूनी तरह से लाये गए जंगली जानवर के संगठन का मानना है की नामबिया , केन्या जैसे देशो से 300 जयादा चीते अरब में भेजे चुके है। चीता के बाद मध्यप्रदेश के वन्य जीवन में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है जो वन्य प्रेमिओ के लिए किसी नायब तोहफे से कम नहीं है। जंगल में चीता का प्रवेश किस प्रकार के परिवर्तन लाएगा यह अवश्य कोतुहल का विषय रहेगा।

मंदिरो का भव्य इतिहास

चेतन वढेर

नीमच माता मंदिर

यह है पहाड़ी की चोटी पर नीमच माता मंदिर का सुंदर दृश्य। उदयपुर में एकलिंगजी मंदिर और , बगेला झील के पास है यह मंदिर। हमारे देश में कई प्रमुख धार्मिक स्थल हैं, जहाँ माता चमत्कारी मूर्ति के रूप में विराजमान हैं। माता की एक ऐसी ही चमत्कारी मूर्ति है 'भादवा माता धाम' में। मध्यप्रदेश के नीमच शहर से लगभग 18 किमी की दूरी पर स्थित माँ भादवामाता का मंदिर एक विश्वविख्यात धार्मिक स्थल है। जहाँ दूर- दूर से लकवा, नेत्रहीनता, कोढ़ आदि रोगों से ग्रसित रोगी आते हैं व निरोगी होकर जाते हैं।

कैलाश धाम

भारत में भगवान शिव जी को समर्पित ऐसे कई मंदिर हैं जो विशाल और खूबसूरत हैं। ऐसा ही एक विशालकाय मंदिर भारत में राजस्थान राज्य के जालौर जिले में बिशनगढ़ गांव में स्थित है। बिशनगढ़ का यह धाम कैलाश धाम के नाम से जाना जाता है। कैलाश धाम बिशनगढ़ जालौर में भगवान शिव जी की 72 फीट ऊंची विशालकाय प्रतिमा स्थापित है।

सोमनाथ मंदिर

गुजरात राज्य के सौराष्ट्र के सागर कांत में स्थित है , एक भव्य सोमनाथ मंदिर । भगवान शिव के 12 पवित्र ज्योतिर्लिंगों में से एक ज्योतिर्लिंग यहां सोमनाथ में है। ऋग्वेद में भी सोमनाथ का उल्लेख मिलता है।कई विनाशकारी विदेशी आक्रमणकारियों ने सोमनाथ के इस मंदिर से आकर्षित होकर इसे परिवर्तित करना चाहते थे । इसलिए इस मंदिर को कई बार नष्ट किया गया और इसका पुन निर्माण हुआ

केदारेश्वर गुफा,

हरिश्चंद्रेश्वर मंदिर, महाराष्ट्र।

करीब पांच फीट लंबा और पानी से घिरा यह शिव लिंग है । लिंग के चारों ओर चार स्तंभ थे, अब केवल एक ही स्तंभ बरकरार है। कुछ लोग मानते हैं कि स्तंभ युग या समय का प्रतीक हैं, अर्थात् सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग। वर्तमान स्तंभ को अंतिम युग का प्रतीक कहा जाता है, जो कलियुग है। कहा जाता है कि जब यह आखिरी खंभा टूट जाएगा तो दुनिया खत्म हो जाएगी।

प्रसाद प्रीह विहार

थाईलैंड और कंबोडिया की सीमाओं पर हमें 'प्रसाद प्रीह विहार' मिलता है, जो लगभग 1000 साल पहले प्राचीन वैदिक राजवंश द्वारा बनाया गया था, जिसे 'खमेर' के नाम से जाना जाता था, उसी राजवंश ने अंगकोर वाट की उत्कृष्ट कृति का निर्माण किया था। समुद्र तल से लगभग 2000 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह कंबोडिया और थाईलैंड के एक चट्टान के किनारे पर बनाया गया था जहा से हरे भरे ग्रामीण इलाकों के शानदार दृश्य दिखता है। 'प्रसाद' का अर्थ 'प्रसाद' है और 'प्रीह' का अर्थ 'प्रिय' है और 'विहार' का अर्थ 'विहार' है जिसका अर्थ है 'निवास' इसका नाम संस्कृत अर्थ प्रिय (प्रिया) का मंदिर (प्रसाद) है। निवास (विहार) ब्रह्मांडीय अक्षीय पर्वत 'मेरु' की महिमा। "हमारे युग की पहली आठ शताब्दियों के दौरान, मध्य एशिया एक प्रकार का भारतीय उपनिवेश था। उस समय वहा पर भारतीय धर्म और कला का प्रभुत्व था। प्रारंभिक मध्य युग में एक भारत की सीमाएं मध्य एशिया तक फैली हुई थी।

ओनाकोना मंदिर

हजारो वर्ष पुराने इस शिवमंदिर की इंजीनियरिंग आपको हैरान कर देगी हम साधारण सा मकान बनाते है तो उसपर भी बीम लगाने की जरूरत पड़ती है, लेकिन यह इतना भव्य और विशाल मंदिर होने के बाद भी इस मंदिर में कोई बीम नही है ।। आप जरा सोचकर देखे की आपके साथ कितनी बड़ी नाइंसाफी हुई है, अगर यही मंदिर किसी विदेशी ने बनाया होता, तो ४ बार तो दूरदर्शन पर दिखाते, ओर सामाजिक विज्ञान - इतिहास की पुस्तकों में तो छोड़ो, गणित की पुस्तकों में भी इसका वर्णन देते हैं ।। यह मंदिर छत्तीसगढ़ के ओनाकोना गांव में है ।। अब हमारी भव्य विरासत का प्रचार हमे ही करना है।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर

दक्षिणेश्वर काली मंदिर कोलकाता में है , जो भारतीय मान्यताओं के अनुसार एक हिंदू नवरत्न मंदिर है। हुगली नदी के पूर्वी तट पर स्थित, मंदिर के पीठासीन देवता भवतारिणी हैं, जो माँ काली का एक रूप है जिसे आदिशक्ति कालिका के रूप में भी जाना जाता है। दक्षिणेश्वर का यह मंदिर कोलकाता में रानी रश्मोनी ने 31 मई, 1855 को बनाया था।

अंजनेरी महाबली हनुमान का जन्मस्थान

अंजनेरी महाबली हनुमान का जन्मस्थान महाराष्ट्र राज्य के नासिक शहर में अंजनेरी हिल्स में स्थित पांच हज़ार साल पुराना यह मंदिर है। अंजनेरी हनुमान का जन्मस्थान है, और इसका नाम हनुमान की मां 'अंजनी' के नाम पर रखा गया है। भक्तों और पैदल यात्रियों के लिए अंजनेरी का प्रमुख महत्व है। हनुमान ने अपना बचपन बिताया और उसी पहाड़ पर पले-बढ़े। यहां 12वीं शताब्दी की एक सौ आठ जैन गुफाएं पाई जाती हैं

गौतमेश्वर शिव मंदिर

यह अनोखा मंदिर राजस्थान के प्रतापगढ़ में स्थित है। यह मंदिर गौतमेश्वर शिव मंदिर के नाम से जाना जाता है। मंदिर प्रांगण में मोक्षदायिनी कुंड में स्नान करने के बाद पुजारी उसे पाप मुक्ति का सर्टिफिकेट देते हैं।

कुतुब मीनार से भी ऊंचा मन्दिर !

राजस्थान के हनुमानगढ जिले में स्थित संगरिया में स्थापित माता भद्रकाली एवं महाकाली माता का मंदिर अपने आप में अनूठा और सबसे ऊंचा है। खास बात यह है कि इसकी ऊंचाई 275 फीट है। दावा किया जा रहा है कि देश में मां के सभी मंदिरों से इसकी ऊंचाई सबसे ज्यादा है। इसी तरह का काली मां का एक मंदिर बिहार के अरिया जिले में है, जिसकी ऊंचाई 152 फीट है। संगरिया के 21 मंजिला इस मंदिर की इमारत के आखिर में गुंबद है। करीब 24 साल से इस मंदिर का निर्माण चल रहा है। बड़ी बात ये है कि इसके निर्माण के लिए अभी तक किसी से कोई सहयोग नही मांगा गया, भक्तों ने अपनी इच्छा अनुसार निर्माण सामग्री का योगदान दिया है। मंदिर निर्माण कर्ता संस्थापक एवं संचालनकर्ता श्री परमपूज्य तपस्वी राज श्री श्री 1008 बाबा सेवादास महाराज के शिष्य श्री श्री 108 मौनी बाबा शीतलदास महाराज उदासीन निर्वाण श्री पंचायती अखाड़ा बताते हैं कि मंदिर में माता भद्रकाली और माता महाकाली की प्रतिमाएं हैं। इसके अलावा श्री काल भैरव सिद्पीठ का प्राचीन मंदिर, श्री श्री 1008 बाबा सेवादास महाराज उदासीन निर्वाण श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा ब्रह्मालीन का भव्य गुरु मंदिर (समाधि) भी स्थापित है। मंदिर में कृष्ण-राधा, शिव पार्वती, हनुमान जी के साथ प्रत्येक देवी-देवता और सभी ऋषि मुनियों की प्रतिमाएं स्थापित हैं।ऐसे हुई शुरूआत...1995 में हुई शुरुआत, अब तक चल रहा सुधार का काम: माता भद्रकाली महाकाली माता के मंदिर के निर्माण कार्य की शुरुआत 24 जनवरी 1995 में हुई। दिनांक 22 मार्च 2012 को श्री महाकाली माता की मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा की गई। इसमें श्री काल भैरवनाथ भगवान के मंदिर की नींव 7 अप्रैल 1992 को रखी गई। उसके बाद करीब 9 वर्ष तक निर्माण कार्य चला। 9 नवंबर 2000 में प्राण-प्रतिष्ठा हुई। मौनी बाबा शीतलदास महाराज ने बताया कि मन में हमेशा इच्छा थी कि संगरिया में श्री भद्रकाली-महाकाली माता का भव्य मंदिर बने। इसी पर काम शुरू किया तो सब साथ जुड़ते गए। 24 साल से मंदिर में काम जारी है। किसी से भी कोई राशि नहीं ली गई। सब काम लोगों ने इच्छानुसार कराए हैं

भारत में निर्गामी पर्यटन में नए मौके

विदेश यात्रा कुछ साल पहले तक महंगे यात्रा विकल्प के तौर पर लिया जाता था। ऐसा माना जाता था की विदेश यात्रा में धन अधिक खर्च होगा पर वर्त्तमान में निर्गामी पर्यटन में तेज़ी से बदलाव आ रहा है। कोविद के दो साल के लगातार तालाबंदी के बाद अब इस क्षेत्र में तेजी देखी जा रही है और दुसरे देश के यात्रा के लिए पर्यटक अपनी रूचि दिखा रहे है। घूमने या छुट्टिओ में भारतीय जहा 1200 डॉलर खर्च करता है वही अमेरिका का नागरिक 700 डॉलर और यूरोपियन 500 डॉलर प्रति यात्रा खर्च करता है। एक अमेरिकी दौरे में जिसमे 15 से 35 दिन शामिल रहता है, एक भारतीय 3 से 5 लाख रुपये खर्च करता है, वही इंग्लैंड के 15 दिन की यात्रा में 3 लाख, 3 से 5 दिन की फ्रांस यात्रा में 2.5 लाख और चार से पांच दिन के हांगकांग यात्रा में एक से दो लाख खर्च करता है। इसमें हवाई यात्रा टिकट, होटल में रहना और आस पास के जगह का भ्रमण खर्च शामिल है। अगले तीन साल में निर्गामी पर्यटन का बाजार 40 बिलियन डॉलर के पार जाने का अंदेशा है। सबसे जायदा विदेशो में जाने वाले पर्यटक में 25 से 35 उम्र के व्यक्ति होते है यानि 34 प्रतिशत, वही 35 से 44 आयु सीमा के व्यक्ति 22 प्रतिशत होते है। 44 प्रतिशत भारतीओ के यात्रा उद्देश्य मौज़ मस्ती रहती है तो वही 19 प्रतिशत व्यापार के लिए यात्रा करते है। शिक्षा के लिए 3 प्रतिशत और एक प्रतिशत के यात्रा का कारण धार्मिक होता है।

मौज़ मस्ती के लिए जाने वाले यात्रिओ में 65 प्रतिशत की पहली पसंद दक्षिण एशिया तो वही अफ्रीका 33 प्रतिशत, ऑस्ट्रेलिया 32 प्रतिशत, उत्तर अमेरिका 21 प्रतिशत और पश्चिम यूरोप 17 प्रतिशत है। इस साल जनवरी से मई के महीने में 72 लाख 23 हज़ार विदेश यात्रा के लिए गए जबकि पिछले साल यानि 2021में यह संख्या 28 लाख 40 हज़ार के आस पास थी। अगर इन आकड़ो पर नज़र रखे तो पता चलता है की वृद्धि दर 154.3 के आस पास रही जो कोविद काल के दौरान माइनस 35.4 प्रतिशत से बढ़ के इस स्तर तक पंहुचा।

निर्गामी पर्यटन में चीन के बाद भारत दूसरा बड़ा बाजार है। चिकित्सा और स्वास्थ्य ने इस क्षेत्र में प्रगति के नए द्वार खोले है। 85 प्रतिशत ग्राहक अपने पसंद के यात्रा पैकेज की मांग करते है और इस बात के साथ यह भी संज्ञान में आया है की इस कार्य के लिए अगर यात्रा कंपनी ग्राहक के निजी

तालाबंदी के बाद ऑनलाइन का चलन बढ़ा है और 2021 के मुकाबले 2022 में ऑनलाइन बुकिंग में 66 प्रतिशत का इजाफा देखा गया है।

जानकारी मांगे, तो देने के विषय में किसी प्रकार की नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं देखी गयी है। इसी कारण से आज डिजिटल के दुनिया में यात्री कई प्रकार के आधुनिक संगणक एप्लीकेशन के माध्यम से अपनी यात्रा योज़ना की रूप रेखा तय करते है।

तालाबंदी के बाद ऑनलाइन का चलन बढ़ा है और 2021 के मुकाबले 2022 में ऑनलाइन बुकिंग में 66 प्रतिशत का इजाफा देखा गया है। स्मार्ट फ़ोन की तरह ही स्मार्ट घडी ने अब यात्रा के तरीको में बड़ा बदलाव किया है। साल 2030 तक ऑनलाइन तरीके से ही सारे कार्य होने की संभावना देखी जा रही है। हवाई यात्रा के दौरान बोर्डिंग पास, अपने स्मार्ट घडी से स्कैन करके यात्रा करना हो या अपने लिए वाहन की बुकिंग करना हो , सब कुछ आपके आधुनिक उपकरण से ही होने लगेगा। आभासी

वास्तविकता तकनीक के माध्यम से किसी जगह पर जाने से पहले उसका अनुभव कर लेने की तकनीक भी अब विकसित की जा रही है।

भारतीओ में विदेश यात्रा को लेकर कुछ और पर्यटन की संभावना देखी जा रही है। इनमे विवाह के लिए विदेश को गंतव्य के रूप में चुनना। हर साल दस मिलियन शादी होती है। इसके आलावा खेल पर्यटन भी लोकप्रिय होता जा रहा है। विदेशो में खेल देखने की रूचि रखने वाले भारतीयों में सबसे जयादा 18 से 35 आयु वर्ग के लोग आते है। वाइन और बढ़िया खाना भी विदेश यात्रा के वजह बनते जा रहे है। भारत में विदेश जाने को लेकर प्रमुख चुनौती पासपोर्ट की है। अभी भारत के पासपोर्ट से 60 गंतव्य की यात्रा की जा सकती है और हेनले पासपोर्ट इंडेक्स में भारतीय पासपोर्ट 83 पायदान में है। इसके साथ वीसा प्रक्रिया को और दुरुस्त करना भी ज़रूरी है।

शिल्पकला उत्सव में इजारा का फूड स्टॉल

इस बार हमारी महिला इकाई "इजारा" ने शिल्पकला उत्सव में फूड स्टाल के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यह उत्सव दिल्ली में पिछले 13 सालो से आल इंडिया वीमेन कांफ्रेंस के माध्यम से आयोजित किया जा रहा है जिसमे 19 राज्यों के महिलाये अपने हस्तशिल्प कला की प्रदर्शनी लगाती है। इस बार हमारी संस्था इजारा ने खाने के स्टाल के माध्यम से स्वादिष्ट भोजन का अनुभव करवाया। हमारी आगे भी कोशिश रहेगी की इजारा के माध्यम से महिलाओ को खाद्य उद्योग में रोजगार के मौके उपलब्ध करवा के उन्हें आत्मनिर्भर बनाये।

पर्यटन में असीम सम्भावनाओ के मध्य विकास की नई रफ़्तार पर जमैका

जमैका कैरेबियन सागर में एक विशाल द्वीप है। यह मध्य अमेरिका से 630 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। इसके निकट पड़ोसी देश में पूर्व में हैती और उत्तर में क्यूबा स्थित हैं। द्वीप के पूर्व में पहाड़ और पठार हैं। यह रेतीले समुद्र तटों और कई प्राकृतिक खाड़ियों के साथ तटीय मैदानों से घिरा हुआ एक देश है। जमैका के पोर्टफोलियो मंत्री एडमंड बर्लेट के अनुसार अगले साल यानि वर्ष 2023 में उनके देश को पर्यटन से अनुमानित US $ 5 बिलियन की कमाई करने की उम्मीद है । हलाकि जमैका एक द्वीप है पर समुद्री पर्यटन के असीम सम्भावनाओ के मध्य यह देश अनुमान लगा रहा है की साल 2024 के शुरुवाती महीने में ही पचास लाख पर्यटक उनके देश आ सकते है।

पोर्टफोलियो मंत्री एडमंड बर्लेट यह सब बाते जमैका ग्राहक सेवा संघ और राष्ट्रीय ग्राहक सेवा सप्ताह के सालाना कार्यक्रम में उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए कह रहे थे।

श्री बार्टलेट ने कहा कि 2022 के अंत तक उन्होंने यूएस $ 4 बिलियन के लक्ष्य को पूरा किया है और वर्ष 2023 तक इसमें विकास की रफ़्तार देखि जा सकेगी। इस लक्ष्य को वह एक उपलब्धि के तौर पर देख रहे है।

2020 से लेकर 2025 के अंतराल में पांच वर्ष में 5 मिलियन पर्यटक और 5 बिलियन अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य जमैका अपने देश में देख रहा है। इस लक्ष्य में चुनौती है पर पहले दो साल में इस देश ने रफ़्तार ली है।

कोविद के समय इस देश के अर्थव्यवस्था में 5.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई और इसमें पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र का पर्याप्त योगदान रहा।

पीआईओजे के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि 'होटल और रेस्तरां' के उपक्षेत्र में अनुमानित 55.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। डेटा यह भी दर्शाता है कि स्टॉपओवर आगंतुकों द्वारा ठहरने की औसत लंबाई 2019 के 7 से 9 रातों औसत स्तर पर वापस आ गई है, और श्री बार्टलेट के अनुसार, 10 दिन / रात ठहरने के लक्ष्य की और उनकी योज़ना है। जमैका में प्रति पर्यटक औसत खर्च 168 अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 182 अमेरिकी डॉलर प्रति रात हो गया है।

जमैका टूरिस्ट बोर्ड के बारे में

जमैका टूरिस्ट बोर्ड स्थापना 1955 में राजधानी किंग्स्टन में की गयी थी जो अब जमैका की राष्ट्रीय पर्यटन एजेंसी है। जेटीबी कार्यालय मोंटेगो बे, मियामी, टोरंटो और लंदन में भी स्थित हैं। प्रतिनिधि कार्यालय बर्लिन, बार्सिलोना, रोम, एम्स्टर्डम, मुंबई, टोक्यो और पेरिस में स्थित हैं।

2021 में, JTB को वर्ल्ड ट्रैवल अवार्ड्स द्वारा लगातार दूसरे वर्ष 'वर्ल्ड्स लीडिंग क्रूज़ डेस्टिनेशन,' 'वर्ल्ड्स लीडिंग फैमिली डेस्टिनेशन' और 'वर्ल्ड्स लीडिंग वेडिंग डेस्टिनेशन' घोषित किया गया, जिसने इसे 'कैरिबियन का लीडिंग टूरिस्ट बोर्ड' भी बना दिया । लगातार 14वां वर्ष; और लगातार 16वें वर्ष 'कैरिबियन का अग्रणी गंतव्य'; साथ ही 'कैरिबियन का सर्वश्रेष्ठ प्रकृति गंतव्य' और 'कैरिबियन का सर्वश्रेष्ठ साहसिक पर्यटन गंतव्य' का भी ख़िताब हासिल किया।

इसके अलावा, जमैका को चार गोल्ड 2021 ट्रैवी अवार्ड्स से सम्मानित किया गया, जिसमें 'बेस्ट डेस्टिनेशन, कैरिबियन/बहामास,' 'बेस्ट कलिनरी डेस्टिनेशन-कैरिबियन,' बेस्ट ट्रैवल एजेंट एकेडमी प्रोग्राम, 'शामिल हैं; साथ ही 10वीं बार रिकॉर्ड-सेटिंग के लिए 'इंटरनेशनल टूरिज्म बोर्ड प्रोवाइडिंग द बेस्ट ट्रैवल एडवाइजर सपोर्ट' के लिए ट्रैवलएज वेस्ट वेव अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।

भारत के 15 सुरम्य गांव , एक बार यात्रा अवश्य करें

चाहे आपको रोमांच पसंद हो या अतीत का रहस्य, भारत यात्रियों के लिए किसी खजाने की खोज से कम नहीं है। वह चाहे स्वादिष्ट भोजन की बात हो या विभिन्न प्रकार की संस्कृतियाँ, किसी भी देश के मुकाबले भारत में विकल्प की कोई कमी नहीं । लेकिन शहरवासियों के लिए, दैनिक जीवन के दौर के साथ गांव का सुकून कहा है ? तो चलिए गांवों की यात्रा में ? हमने देश के 15 दर्शनीय और सुरम्य गांवों की एक सूची तैयार की है जो आपको शांति और एकांत प्रदान करेंगे।

गौर कंजीलाल
डी डी जी पर्यटन सेवानिवृत
पर्यटन मंत्रालय

1. लंढौर, उत्तराखंड

प्रसिद्ध लेखक रस्किन बॉन्ड का घर, लंढौर अपने तेंदुओं, देवदार के पेड़ों और बर्फीले पहाड़ों के लिए जाना जाता है। एक ब्रिटिश भारत के समय का यह छावनी शहर मसूरी से 30 मिनट की दुरी पर है। शहर की सुंदरता मानो दिवार में टंगी किसी तस्वीर से सीधे बाहर आती हुई प्रतीत होती है। लोकप्रिय पर्यटन स्थलों से दूर आप खुद को शहर की प्राकृतिक सुंदरता में खोते हुए पाएंगे। अपने खाली समय में दो पुराने चर्चों - सेंट पॉल चर्च (1839) और केलॉग मेमोरियल चर्च (1909) को देखना न भूलें।

घूमने का सबसे अच्छा समय: अप्रैल से जून
दूरी: लंढौर दिल्ली से मसूरी होते हुए 300 किमी दूर है।

2. माजुली, असम

माजुली दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है! हलचल से दूर, माजुली को असम की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जाना जाता है। यह द्वीप प्रदूषण से मुक्त है और चारों ओर से हरी-भरी हरियाली से आच्छादित है। जून के महीने के दौरान जब रास पूर्णिमा समारोह होता है, तो गांव का दौरा करें। आपको भोजन, कला और सांस्कृतिक नृत्य के रूप में विविध संस्कृति देखने को मिलेगी। काम से छुट्टी लेकर पर्यावरण के साथ हो लें। अपने दूरबीन ले जाएं क्योंकि यह द्वीप पक्षियों की कुछ दुर्लभ प्रजातियों का सैरगाह भी है!

घूमने का सबसे अच्छा समय: अक्टूबर से फरवरी।
दूरी: जोरहाट से 20 किमी, लेकिन हम गुवाहाटी से 350 किमी की सुंदर सड़क यात्रा की सलाह देंगे । गुवाहाटी से एक कार किराए पर लें और सड़क मार्ग से यात्रा करे ।

3. मासिनागुडी, तमिलनाडु

एक अलग स्थान, मसीनागुडी हरे भरे नीलगिरि पहाड़ों की तलहटी पर स्थित है। ऊटी से सिर्फ 30 किमी दूर, मासिनागुडी अत्यधिक व्यावसायीकरण से अछूता क्षेत्र है और आमतौर पर भीड़-भाड़ वाले पर्यटन स्थलों से बहुत दूर है। मुदुमलाई वन्यजीव अभयारण्य और बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान के करीब होने के कारण, जंगल की सैर में खुद को खोने के लिए मसीनागुडी सबसे अच्छी जगह है। आप चाहे तो सितारों के नीचे डेरा डालिये या मारवाकांडी बांध और हिमावद गोपालस्वामी बेट्टा की यात्रा पर जाइये या दूसरी तरफ बाघों और हाथियों को देखने के लिए मोयार नदी के किनारे बैठा जा सकता है।

घूमने का सबसे अच्छा समय: मार्च से जून और सितंबर से अक्टूबर।
कैसे पहुंचा जाये: बैंगलोर से 270 किमी, कोयंबटूर से 116 किमी।

4. मलाणा, हिमाचल प्रदेश

कुल्लू घाटी का एक प्राचीन गाँव है मलाणा। यह गांव उन लोगों के लिए है जो पहाड़ों में एक आरामदेह सप्ताहांत की तलाश में हैं। कम निवासियों वाले इस मलाणा गांव की यात्रा में यात्रियों को स्थानीय लोगों के साथ बातचीत करने का एक शानदार मौका मिलता है। आप कुछ प्रसिद्ध ट्रेक के लिए जा सकते हैं, साहसिक खेलों में भाग ले सकते हैं, या पार्वती घाटी के सुंदर दृश्यों के साथ शिविर लगा सकते हैं। मलाणा हैश उत्पादन की अच्छी गुणवत्ता के लिए भी प्रसिद्ध है। अपने प्रवास को बढ़ाने के लिए आप कसोल और तोश गांव जा सकते हैं।

घूमने का सबसे अच्छा समय: मार्च से जून।
दूरी: चंडीगढ़ से 285 किमी, दिल्ली से 518 किमी।

5. खिमसर, राजस्थान

राजस्थान के केंद्र में छिपा एक रंगीन गांव, खिमसर कला और संस्कृति के प्रति उत्साही लोगों के लिए एक जरूरी यात्रा है। शाही अनुभव के लिए एक लक्जरी विरासत होटल भी है खिमसर किला। इसकी यात्रा अवशय करें। खिमसर के टिब्बा गांव में ऊंट की सवारी या रेगिस्तान की सफारी का लुत्फ ले । इको-फ्रेंडली छोटी-छोटी झोपड़ियाँ, लोक संगीत और अच्छी रौनक यहाँ आपका स्वागत करेगी। इस गांव से थार रेगिस्तान के राजसी दृश्यों के साक्षी बनें। खिमसर ब्लैक बक सहित मृगों की कुछ दुर्लभ प्रजातियों का भी घर है। पांचाला ब्लैक बक रिजर्व आपको जगह के समृद्ध वनस्पतियों और जीवों की एक झलक देगा। रिजर्व के पास स्थित नागौर किला अपनी शानदार वास्तुकला के लिए जाना जाता है ।

घूमने का सबसे अच्छा समय: अक्टूबर से फरवरी।
दूरी: जयपुर से 280 किमी। जयपुर से रोडट्रिप के मध्य भव्य परिदृश्य के संग संग देहाती भोजन आपकी भूख बढ़ा देगा।

6. खज्जियार, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल की बेदाग खूबसूरती खज्जियार को भारत का मिनी स्विटजरलैंड भी कहा जाता है। शहर के शांत वातावरण के साथ, खज्जियार हिमाचली संस्कृति के साथ साथ पहाड़ियों के बीच एक आरामदायक छुट्टी का वादा करता है। खज्जियार को कुछ बेहतरीन ट्रेकिंग मार्गों से नवाजा गया है जो झिलमिलाती झीलों और घने जंगल वाले क्षेत्रों से होकर गुजरते हैं जो शक्तिशाली हिमालय की छाया में स्थित हैं। कालाटोप वन्यजीव अभयारण्य ट्रेकर्स के बीच बेहद पसंदीदा है।

घूमने का सबसे अच्छा समय: अप्रैल से जून।
कैसे पहुंचा जाये: दिल्ली से सड़क मार्ग से 452 किमी, चंडीगढ़ से 325 किमी।

7. वलपराई, तमिलनाडु

वन्यजीव उत्साही लोगों के लिए एक और सिफारिश, वालपराई अपने चाय के बागानों, लुभावने झरनों, हरे भरे जंगलों में लंबी पैदल यात्रा और भी बहुत कुछ के लिए प्रसिद्ध है! चाहे आप साइकिलिंग ट्रेल्स का अन्वेषण करें या प्रकृति की सुंदरता को निहारते हुए बांधों की यात्रा करें। इस गांव में मौजूद खूबसूरत वन्यजीवों को कैद करने के लिए अपने बेहतरीन कैमरा उपकरण साथ लाएं। यह भारत के अन्य पारंपरिक गांवों की तरह नहीं है, लेकिन प्रकृति और मूल निवासियों के बीच सामंजस्य, वालपराई में देखने लायक एक

परिप्रेक्ष्य है।

जाने का सबसे अच्छा समय: मई से सितंबर।
दूरी: कोयंबटूर से 104 किमी, बैंगलोर से 465 किमी।

8. मांडवा, राजस्थान

18 वीं शताब्दी में स्थापित, मांडवा शुरू में समृद्ध राजस्थानी व्यापारियों का घर था। आज, यहां भव्य हवेलियां जो इतिहास के आकर्षण को उजागर करती हैं और कई इतिहास प्रेमियों के लिए एक चुंबक के रूप में कार्य करती हैं। इनमें से कुछ हवेलियों का दौरा करते हुए राजस्थानी संस्कृति के सार का अनुभव करें। अपनी यात्रा का अधिकतम लाभ उठाने के लिए स्थानीय राजस्थानी व्यंजनों का सेवन करें, हरलालका वेल को देखें और आस-पास के स्थानीय बाजारों में खरीदारी करें।

घूमने का सबसे अच्छा समय: अक्टूबर से मार्च।
दूरी: जयपुर से 180 किमी।

9. जीरो गांव, अरुणाचल प्रदेश

अपनी खूबसूरत देवदार की पहाड़ियों और पहाड़ी चावल की खेती के लिए जाना जाता है - जीरो गांव जो अरुणाचल प्रदेश की अपतानी जनजाति का एक प्राचीन गांव है। यदि आप गांव की सच्ची संस्कृति का अनुभव करना चाहते हैं, तो आपको जनवरी में मुरुंग अनुष्ठानों के दौरान जाना चाहिए। एक और महान समय जुलाई के द्वी महोत्सव के दौरान होता है जहां जनजाति देवताओं का सम्मान करने के लिए पशु बलि का अभ्यास करती है। जगह की शांति का आनंद लें और लोकप्रिय चावल के व्यंजन के साथ मछली की खेती को देखते हुए किसानों के साथ अच्छी बातचीत करें। यदि उत्तर पूर्व को भारत के अनुशंसित गांवों की सूची में प्रतिनिधित्व की आवश्यकता है, तो जीरो एक शीर्ष दावेदार है।

घूमने का सबसे अच्छा समय: अक्टूबर से फरवरी
दूरी: गुवाहाटी से 450 किमी। एक टैक्सी बुक करें और अरुणाचल की सुदूर पहाड़ियों पर जाएँ।

10. चौगान गांव, मध्य प्रदेश

गोंड और बैगा जैसी स्वदेशी जनजातियों का घर, चौगान गाँव कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के बहुत करीब स्थित है। गाँव के बारे में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि रुडयार्ड किपलिंग ने इसी गाँव से जंगल बुक की प्रेरणा

ली थी! भारत के इन आदिवासी गांवों के आकर्षण का अनुभव करें और यहां रहते हुए अपने जंगल बुक के सपने को साकार करें!

घूमने का सबसे अच्छा समय: अक्टूबर से फरवरी।
कैसे पहुंचा जाये: भोपाल से 200 किमी।

11. मोतिहारी, बिहार

क्या आप जानते हैं जॉर्ज ऑरवेल का जन्म बिहार के मोतिहारी में हुआ था? 1903 में, ऑरवेल के जन्म तारीख के समय उनके पिता रिचर्ड डब्ल्यू ब्लेयर, इस सुदूर शहर में अफीम विभाग के लिए काम कर रहे थे। उनके बंगले और पास की एक झोपड़ी को अब बहाल करके एक संग्रहालय में बदल दिया गया है। मोतिहारी पूर्वी चंपारण जिले का एक हिस्सा है और इसका ऐतिहासिक महत्व है। महात्मा गांधी ने 1917 में चंपारण से सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया था। जब आप यहां हों, तो केसरिया स्तूप की यात्रा करें, जो गुप्त वंश के समय का है।

घूमने का सबसे अच्छा समय: नवंबर से अप्रैल।
कैसे पहुंचा जाये: पटना से 118 किमी।

12. मुनस्यारी, उत्तराखंड

उत्तराखंड की विचित्र पहाड़ियों के बीच समुद्र तल से 2298 मीटर ऊपर स्थित, मुनस्यारी एक छोटा सा गाँव है जो कई ट्रेक के लिए आधार शिविर के रूप में कार्य करता है। इस गांव से हिमालय पर्वतमाला का मनोरम दृश्य दिखाई देता है। यह ज्यादातर पंचचुली चोटियों के लिए प्रसिद्ध है जो लगभग 6000 मीटर की ऊंचाई पर पांच चोटियों का एक समूह है। कुछ अविश्वसनीय रूप से लुभावने हिमालयी ट्रेक जैसे मिलन ट्रेक, रामिक ट्रेक और नालम ट्रेक यहाँ से शुरू होते हैं।

घूमने का सबसे अच्छा समय: मार्च से अक्टूबर।
दूरी: दिल्ली से 560 किमी.

13. प्रागपुर, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित, प्रागपुर की स्थापना 16वीं शताब्दी में हुई थी। प्रागपुर अपनी अपरिवर्तित सुंदरता के लिए जाना जाता है। पत्थर की गलियां, पुरानी दुकानें, पुराने जमाने की पानी की टंकियां, हवेलियां और स्लेट की छत वाले घर। प्रागपुर को देश का पहला हेरिटेज विलेज कहा जाता था। गरली, धलीहारा के बाजारों का भ्रमण करें और सिद्ध चानो मंदिर, छिन्नमस्तिका धाम और ज्वालाजी माता मंदिर जैसे प्रसिद्ध मंदिरों की आध्यात्मिक यात्रा करें।

घूमने का सबसे अच्छा समय: अक्टूबर से मार्च।
दूरी: दिल्ली से 420 किमी.

14. अयमानम, केरल

भीड़भाड़ वाले पर्यटन स्थलों से दूर अयमानम एक प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त क्षेत्र है। विभिन्न होमस्टे, होटल और रिसॉर्ट ने इसे आदर्श पर्यटन स्थान बना दिया है। यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रकृति की शांति को पसंद करते हैं, तो यह जगह आपके लिए उपयुक्त है! केरल अपनी सुंदरता के लिए जाना जाता है, लेकिन अगर आप किसी अलग जगह को देखना चाहते हैं, तो अयमानम वह जगह है! स्थानीय चर्चों और मंदिरों की यात्रा से लेकर बैकवाटर के माध्यम से नाव की सवारी करने तक के विकलप मौजूद है।

घूमने का सबसे अच्छा समय: सितंबर से मार्च।
दूरी: कोचीन से 85 किमी। कोच्चि से कैब किराए पर लें - केरल में सड़क मार्ग से घूमना ही एकमात्र तरीका है

15. ऋषप, पश्चिम बंगाल

ऋषप नेओरा वैली नेशनल पार्क के पास 2600 मीटर की ऊंचाई पर एक विचित्र गांव है। ऋषप की प्राचीन जीवन शैली आपको उत्तर बंगाल की समृद्ध संस्कृति और सुंदरता की एक झलक देगी। ऊँचे चीड़ के पेड़ों के साथ आकर्षक जंगल बेहद मनमोहक लगता है।

घूमने का सबसे अच्छा समय: अक्टूबर से मार्च
दूरी: बागडोगरा हवाई अड्डे से 114 किमी, सिलीगुड़ी से 104 किमी

अब नहाने के लिए जापान की यात्रा कीजिये सबसे अनूठे तरीके के स्नानागार का आनंद ले

हकोन कोवाकिएन युनेसुन

युनेसुन क्या है?

युनेसुन एक हॉट स्प्रिंग थीम पार्क है जो कानागावा प्रान्त के प्रसिद्ध दर्शनीय क्षेत्र हकोन में स्थित है। असली कॉफी बीन्स से बने कॉफी बाथ और वाइन बाथ जैसे अनोखे स्नानागार हैं। इसके अलावा, मोरी नो यू में जापानी शैली के ओपन एयर बाथ और गर्म झरनों का आनंद ले सकते हैं।
नहाते नहाते थक गए तो पास ही में एक आधिकारिक होटल भी है जहा पर जाकर विश्राम कर ले।
कितने तरीको से आप यहाँ आप स्नान का आनंद ले सकते है?

कॉफी स्नान

यह स्नानागार कम गर्मी की नेल ड्रिप शैली की ब्रूड कॉफी से बना है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसमें रिचार्जिंग, आराम, त्वचा को सुशोभित करने वाले प्रभाव होते हैं। कॉफी की सुगंध में आराम करते हुए समय गुजरना स्वयं को तारो ताजा कर देता है

वाइन बाथ

इस वाइन बाथ में एक शानदार अंगूर का रंग और समृद्ध सुगंध है। स्नान के दौरान यह आपको तरो ताज़ा कर देगा । ऐसा कहा जाता है कि यह क्लियोपेट्रा और क्वीन मैरी को इस तरह के स्नान से बेहद लगाव था। यह एक ऐसा स्नान है जिससे आप त्वचा में निखार आ सकता है।

खुली हवा में दर्शनीय स्नानागार

एक खुली हवा में स्नान का मज़ा लेते हुए हाकोन पहाड़ों का मनोरम दृश्य , इस 40 मीटर लम्बे स्नानागार में मुमकिन है। अगर आप सर्दियों में यहाँ पर आते है तो पहाड़ भाप में लिपटे मिलेंगे और शरद ऋतू का सुहावना पल शानदार नज़ारा पेश करता है।

इंडोर बाथ

एक बड़ी खिड़की के साथ एक इनडोर स्नानघर आपको ऐसा महसूस कराता है जैसे आप बाहर हैं। यह एक इनडोर स्नान है इसलिए मौसम से कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। आप बरसात या बर्फीले दिनों में गर्म झरनों का आनंद ले सकते हैं।

सिरेमिक स्नान

सिरेमिक स्नान में जापानी पारंपरिक 'शिगारकी वेयर' मिट्टी के बर्तनों का उपयोग होता है। यहां, आपके साथ कई लोग प्रवेश कर सकते हैं। रात में, आप हाकोन के स्पष्ट तारों वाले आकाश को देखकर आराम कर सकते हैं।

निजी स्नान

परिवार या दोस्तों के लिए निजी स्नान चाहते है तो यहाँ उसका भी इंतज़ाम है। इंडोर स्टाइल बाथ या हाफ साइज ओपन एयर बाथ को निजी इस्तेमाल के लिए आप स्वयं के लिए आरक्षित कर सकते है। 1 घंटे के लिए 1 कमरे की कीमत 5000 येन है।

ट्रैवल एजेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष ज्योति मायल और संपादक बिस्वदीप रॉय चौधरी की मुलाकात श्री लंका के रोडशो के दौरान हुई,

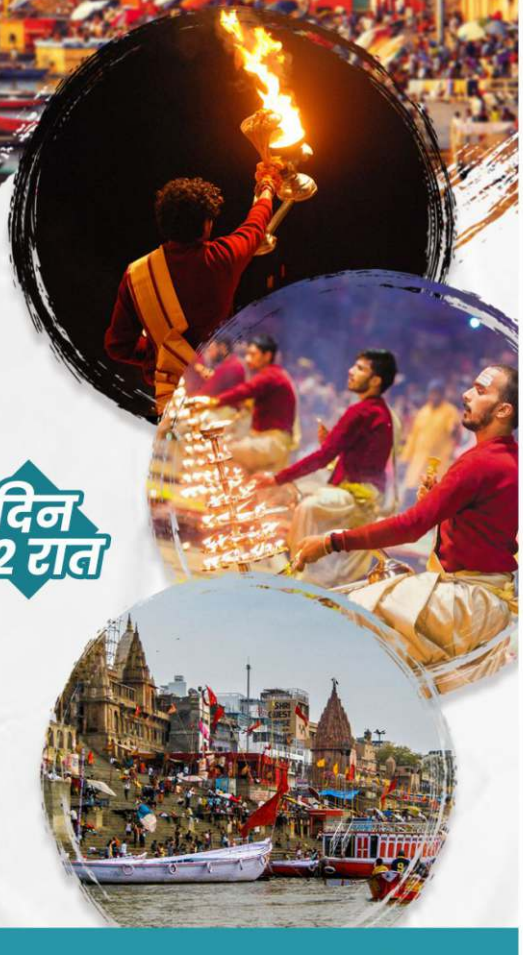

यात्रा आमंत्रण
टूर एंड ट्रॅव्हल्स
केवल महिला श्रद्धालुओं के लिए
वाराणसी
सारनाथ
धार्मिक यात्रा...
2022
इस यात्रा में शामिल है
मंदिरो के दर्शन | गंगा आरती | ट्रैन यात्रा
काशी विश्वनाथ मंदिर दर्शन | थाई मंदिर दर्शन
शुद्ध शाकाहारी भोजन | धर्मशाला में रहना
यात्रा प्रारंभ होगी
नागपुर | पुणे | मुंबई | अमरावती
3 दिन 2 रात
यात्रा समय सारणी
20 सितम्बर | 18 अक्टूबर | 15 नवंबर
प्रति महिला
6666*
रुपये
न्यूनतम समूह संख्या:
दस महिलाये
*शर्तें लागू
7758968909
8669900014
9971229644
www.yatramantran.com
पता : बी 121 , दूसरा तल , ग्रीन फील्ड कॉलोनी , फरीदाबाद , हरियाणा
निवेदन : धार्मिक और सामाजिक संस्था अनुदान देकर गरीब महिलाओ को यात्रा करवा सकते है।

इजारा

महिलाओ द्वारा संचालित भोजनालय

— OUR PRESENCE —

Mumbai | Delhi | Dehradun
Valsad | Amravati | Lucknow
Thane | Dist Palghar | Prayagraj
Chennai

हम है इजारा,
हमारे साथ कीजीये स्वाद से परिचय

BOLLYWOOD
FIRST ALL
WOMEN
CATERING SERVICE

A project to empower underprivileged WOMEN

A social cause Initiative by
Will India Change Foundation

Visit us at
www.willindiachange.org

WILL INDIA CHANGE FOUNDATION

• CONTACT US •

Project Head/Catering	Project Head/New Mumbai	Project Coordinator/Vidarbha Region
SUHASINI SAKIR	BIDDISHA MUKHOPADHYA	MADHURI SUDHA
+91 77589 68909	+91 98690 51721	+91 93716 71707

For any kind of query whats app at +91 99712 29644

ADDRESS : B 121, 2nd Floor, Green Field Colony, Faridabad, Haryana 121001